प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 8 (2019–20)

हिन्दी–अ कोड (002)

कक्षा–9

निर्धारित समय– 3 घंटे अधिकतम अंक – 80

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खण्ड – क (अपठित अंश) 15

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

हमारी एकता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ चले जाइए, आपको जगह–जगह एक ही संस्कृति के मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च दिखाई देंगे। उत्तर भारत के लोगों का जो स्वभाव है, जीवन को देखने की उनकी जो दृष्टि है, वही स्वभाव और वहीं दृष्टि दक्षिण वालों की भी है। भाषा की दीवार के टूटते ही एक उत्तर भारतीय और एक दक्षिण भारतीय के बीच कोई भी भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक–दूसरे के बहुत करीब आ जाते हैं। वे एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं, उन्होंने देश की आजादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी। धार्मिक विश्वास की एकता मनुष्य की सांस्कृतिक एकता को पुष्ट करती है। अनेक सदियों में हिंदू–मुसलमान साथ रहते आए हैं और इस लम्बी संगति के फलस्वरूप उनके बीच संस्कृति और तहजीब की बहुत–सी समान बातें पैदा हो गई हैं जो उन्हें दिनों–दिन आपस में नजदीक लाती जा रही हैं।

1. हमारी एकता का सबसे बड़ा प्रमाण क्या है? 2

उत्तर : हमारी एकता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी चले जाइए, आपको जगह–जगह एक ही संस्कृति के मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च दिखाई देंगे।

2. भाषा की दीवार टूटने का उत्तर और दक्षिण भारतीयों पर क्या प्रभाव पड़ता है? 2

उत्तर : भाषा की दीवार टूटते ही एक उत्तर भारतीय और एक दक्षिण भारतीय के बीच कोई भी मतभेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक–दूसरे के बहुत करीब आ जाते हैं।

3. हिंदू–मुसलमान साथ रहते आए हैं इस लम्बी संगति का क्या परिणाम हुआ? 2

उत्तर : हिंदू–मुसलमान के साथ रहने से इस लंबी संगति का यह परिणाम हुआ उनके बीच सांस्कृतिक और तहजीब की बहुत–सी समान बातें पैदा हुई जो उन्हें दिनों–दिन नजदीक लाती जा रही हैं।

4. 'सांस्कृतिक' शब्द में 'मूल शब्द' और 'प्रत्यय' अलग–अलग कीजिए। 1

उत्तर : मूलशब्द– संस्कृत प्रत्यय– इक। संस्कृत + इक।

5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : हमारी एकता।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 7

हो गई है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

1. कवि किसके विरुद्ध आग जलाना चाहता है? 2

उत्तर : कवि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध आग जलाने की बात कहना चाहता है। अर्थात् कवि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना चाहता है।

2. 'आग जलनी चाहिए' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? 2

उत्तर : 'आग जलनी चाहिए' के माध्यम से कवि समाज में परिवर्तन लाने की बात कहना चाहता है।

3. उदासीन और निकम्मे लोगों के लिए कवि ने किस शब्द का प्रयोग किया है? 1

उत्तर : उदासीन और निकम्मे लोगों के लिए कवि ने लाश शब्द का प्रयोग किया है।

4. कवि पर्दे की तरह हिलती दीवार की जगह किसे हिलाना चाहता है? 1

उत्तर : कवि पर्दे की तरह हिलती दीवार की जगह बुनियाद को हिलाना चाहता है।

5. कवि ने अपनी पीड़ा को कैसा बताया है? 1

उत्तर : कवि ने अपनी पीड़ा को पर्वत के समान बताया है।

अथवा

बहुत दिनों के बाद,
अबकी मैंने जी भर देखी।
पकी–सुनहली फसलों की मुस्कान,
बहुत दिनों के बाद।
बहुत दिनों के बाद,
अबकी मैं जी भरकर सुन पाया।
धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान,
बहुत दिनों के बाद।
बहुत दिनों के बाद,
अबकी मैंने जी भर सूँघे।
मौलसिरी के ढेर–ढेर से ताजे–टटके फूल,
बहुत दिनों के बाद।
बहुत दिनों के बाद,
अबकी मैं जी भर छू पाया।
अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल,
बहुत दिनों के बाद।

1. कवि ने कहाँ पर और किसको जी भर छू पाया?

उत्तर : कवि ने गाँव की पगडंडी पर पगडंडी की चंदन के रंग जैसी धूल को जी भर छू पाया है।

2. 'धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान' में कौन–सा अलंकार है? क्यों?

उत्तर : अनुप्रास अलंकार है। क्योंकि यहाँ 'क' वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हुई है।

3. मौलसिरी के फूल कैसे थे?

उत्तर : मौलसिरी के फूल ढेरों तथा ताजे खिले हुए थे।

4. किशोरियों की आवाज कैसी थी?

उत्तर : किशोरियों की आवाज कोयल जैसी थी।

5. इस बार कवि ने किसकी मुस्कान देखी?

उत्तर : इस बार कवि ने फसलों की मुस्कान देखी।

खण्ड – ख (व्यावहारिक व्याकरण) 15

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 7

1. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

अपमान, आरक्षण, अतिप्राचीन

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द
1.	अप	मान
2.	आ	रक्षण
3.	अति	प्राचीन

2. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

बुराई, लुहारिन, सौगुना

उत्तर :

	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	बुरा	आई
2.	लुहार	इन
3.	सौ	गुना

3. किन्हीं तीन शब्दों के विग्रह करके समास का नाम लिखिए– 3

प्रतिवर्ष, देशप्रेम, विद्याधन, नीलकंठ

उत्तर :

	विग्रह	समास का नाम
1.	प्रत्येक वर्ष	अव्ययीभाव
2.	देश के लिए प्रेम	तत्पुरुष
3.	विद्या रूपी धन	कर्मधारय
4.	नीला है कंठ जिसका (शिव)	बहुव्रीहि

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 4

1. अर्थ के आधार पर किन्हीं दो वाक्यों में भेद लिखिए–2

1. तुम सदैव स्वस्थ और प्रसन्न रहो।

उत्तर : इच्छावाचक

2. मैं नहीं जा सकूँगा।

उत्तर : निषेधवाचक

3. जब बादल फट जाएँगे, तभी धूप निकलेगी।

उत्तर : संकेतवाचक

2. निर्देशानुसार किन्हीं दो वाक्यों में परिवर्तन करके लिखिए– 2

1. आज वर्षा के कारण मैच नहीं होगा। (संदेहवाचक में)

उत्तर : शायद आज वर्षा के कारण मैच नहीं होगा।

2. उफ! आज कितनी गर्मी है। (विधानवाचक में)

उत्तर : आज बहुत गर्मी है।

3. उसने स्नान नहीं किया। (प्रश्नवाचक में)

उत्तर : क्या उसने स्नान नहीं किया?

5. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं चार के अलंकार भेद पहचान कर लिखिए– 4

1. रति सम रमणीय मूर्ति राधा की।

उत्तर : उपमा अलंकार

2. पायोजी मैंने राम–रतन धन पायो।

उत्तर : रूपक अलंकार

3. मुदित महीपति मंदिर आए।
उत्तर : अनुप्रास अलंकार

4. सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।
उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार

5. वह सोने का हार हार गया।
उत्तर : यमक अलंकार

खण्ड – ग

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 30

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा–पूजा की। हमारी कुल देवी दुर्गा थी। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिन्दी का कोई वातावरण नहीं था।

1. महादेवी के जन्म के समय समाज में लड़कियों की दशा कैसी थी? 2
उत्तर : महादेवी के जन्म के समय समाज में लड़कियों को बोझ माना जाता था। उन्हें जन्म लेते ही मार दिया जाता था। यदि वे पैदा हो जाती थीं तो उनके साथ भेदभाव किया जाता था। उन्हें लड़कों की तुलना में बहुत कष्ट सहने पड़ते थे। उनकी दिशा शोचनीय थी।

2. महादेवी का पालन–पोषण अन्य लड़कियों से भिन्न कैसे और क्यों हुआ? 2
उत्तर : महादेवी के जन्म के समय लड़कियों का तिरस्कार होता था। उन्हें सम्मान नहीं दिया जाता था। न ही पढ़ाया–लिखाया जाता था। महादेवी को इसके विपरीत बहुत सम्मान मिला। उन्हें पढ़ाया–लिखाया गया। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया गया। क्योंकि महादेवी के जन्म के लिए उनके बाबा ने आग्रहपूर्वक दुर्गा देवी की पूजा की थी।

3. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है; इसके लेखक का नाम भी लिखिए। 1
उत्तर : पाठ– मेरे बचपन के दिन, लेखिका– महादेवी वर्मा।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. महादेवी जी अपना कटोरा खोकर क्यों प्रसन्न थीं? 'मेरे बचपन के दिन' पाठ के आधार पर बताइए। 2
उत्तर : महादेवी को इनाम में मिला कटोरा गाँधी जी ने ले लिया। यद्यपि वह गौरवशाली कटोरा महादेवी के हाथों से चला गया, किन्तु वह देशहित में काम आ गया। इस कारण महादेवी जी प्रसन्न थीं।

2. ''बर्डवाचर' किसे कहते हैं? सालिम अली की नजरों में कौन–सी विशेषता थी? 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 2
उत्तर : 'पक्षियों को निहारने वाले' मनुष्य को बर्डवाचर कहते हैं। बर्डवाचर पक्षियों के जीवन में गहरी रुचि लेते हैं। सालिम अली भी प्रसिद्ध बर्डवाचर थे। वे पक्षियों को उन्हीं की नजरों से देखते थे, न कि मानवीय नजरों से।

3. तिब्बत में कानून व्यवस्था और सुरक्षा की क्या स्थिति थी? 'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2
उत्तर : तिब्बत में कानून व्यवस्था और सुरक्षा की स्थिति बहुत चिंताजनक थी। वहाँ पुलिस और सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था। हथियार रखने के बारे में कोई कानून नहीं था। इसलिए लोग मनमाने ढंग से पिस्तौल आदि हथियार रखते थे। यहाँ डाकू–लुटेरे खुलेआम घूमते थे। वे आदमी को पहले मारकर फिर लूटते थे। मरने वाले का न कोई गवाह होता था, न ही उसकी कोई परवाह करता था।

4. 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ में पर्दे का महत्त्व किस प्रकार समझाया गया है? 2
उत्तर : इस पाठ में बताया गया है कि लोग अपने जीवन की बुराइयों को छिपाकर, उन पर पर्दा डालकर जीना पसंद करते हैं। इसलिए वे फटेहाली में भी सुंदर कपड़ों वाला फोटो खिंचवाना पसंद करते हैं।

5. नाना साहब की पुत्री होने के कारण मैना के साथ अंग्रेजों ने कैसा व्यवहार किया? 2
उत्तर : नाना साहब की पुत्री होने के कारण मैना के साथ अंग्रेजों ने निर्दयीपूर्ण क्रूर व्यवहार किया। अंग्रेजी सेना के जनरल आउटरम ने मैना को आग में जलाकर मारने का क्रूर आदेश दिया। इस तरह नन्हीं मैना को नाना साहब की बेटी होने के अपराध में जला दिया गया।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए।
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके,
मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के।

1. इस काव्यांश का मुख्य विषय क्या है एवं पेड़ किसके लिए झुके? 2
उत्तर : काव्यांश में वर्षा से पहले धूल–आँधी चलने और नदी के उमड़ने का वर्णन है। पेड़ मेघों के स्वागत में झुके हैं।

2. आँधी किसका प्रतीक है? वह कैसे दौड़ी? 2
उत्तर : आँधी स्वागत करने वाली किशोरी कन्या का प्रतीक है। वह उत्साह के कारण अपना घाघरा उठाकर दौड़ पड़ी।
3. इस काव्यांश में मुख्य रूप से कौन–सा अलंकार है? 1
उत्तर : मानवीकरण अलंकार।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. 'मेघ आए' कविता में मेघ के आगमन का चित्रण किस रूप में हुआ है? 2
उत्तर : इस कविता में मेघ के आगमन का चित्रण एक सजे–सँवरे शहरी के रूप में हुआ है जो बड़ी प्रतीक्षा करवाने के बाद गाँव में आया।
2. कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ देना संभव नहीं था? 'यमराज की दिशा' कविता के आधार पर उत्तर लिखिए। 2
उत्तर : दक्षिण दिशा का कोई छोर नहीं है। वह अनंत है। इसलिए उसे लाँघ देना संभव नहीं था। प्रतीकार्थ यह है कि शोषण–व्यवस्था का कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता। यह मनोभावना नए–नए रूप धारण करती रहती है और अमर रहती है। इसलिए कोई हमेशा–हमेशा के लिए इससे मुक्त नहीं हो सकता।
3. बच्चे काम पर जा रहे हैं। यह एक भयानक प्रश्न क्यों है? 2
उत्तर : बच्चों का रोजी–रोटी के लिए काम करना निश्चित रूप से भयानक बात है। इस कारण उनका बचपन मारा जाता है, खुशियाँ नष्ट होती हैं। यहाँ तक कि पूरा जीवन कुम्हला जाता है। इसलिए उनका काम पर जाना भयानक प्रश्न है।
4. 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता में वर्णित चिड़िया कैसे रंग की है और वह क्या करती है? 2
उत्तर : इस कविता में वर्णित चिड़िया काले रंग की है। वह जल के भीतर तैरती मछली को देखते ही सफेद पंखों की सहायता से उस पर झपट्टा मारती है तथा उसे अपनी चोंच में लेकर आकाश में उड़ जाती है।
5. रसखान श्रीकृष्ण का सान्निध्य किस–किस रूप में पाना चाहते हैं और क्यों? 2
उत्तर : रसखान श्रीकृष्ण का सान्निध्य (समीपता) पाने के लिए अगले जन्म में अनेक रूपों में आना चाहते हैं। वे मनुष्य बनकर गोकुल गाँव में बसना चाहते हैं। गाय बनकर श्रीकृष्ण की प्यारी धेनु कहलाना चाहते हैं। पत्थर बनकर कृष्ण के हाथों का स्पर्श पाना चाहते हैं और खग बनकर यमुना के किनारे कदंब के पेड़ों पर कलरव करना चाहते हैं।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 4

1. 'शिक्षा पाना बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'– 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए। 2
उत्तर : शिक्षा पाना बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। बच्चों को उचित शिक्षा मिलनी ही चाहिए। यदि कहीं शिक्षा की व्यवस्था नहीं है तो उसके लिए उचित प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

शादी के बाद लेखिका को कर्नाटक के बागनकोट में रहना पड़ा वहाँ उसके बच्चों की शिक्षा हेतु उचित प्रबन्ध नहीं था। उसने वहाँ के कैथोलिक विशप से प्राइमरी स्कूल खोलने का अनुरोध किया।
2. आज माटी वाली बुढ्ढे को कोरी रोटियाँ नहीं देगी– इस कथन के आधार पर माटी वाली के ह्रदय के भावों को अपने शब्दों में लिखिए। 2
उत्तर : माटी वाली एक मजबूर पत्नी है। उसका पति विवश और बूढ़ा है। वह पूरी तरह अपनी पत्नी पर निर्भर हो चुका है। इसलिए माटी वाली उसका पूरा ध्यान रखती है। वह खुद खाने से पहले उसके लिए बचाकर रखती है। उसमें अपने जीवनसाथी के प्रति गहरा प्रेम और लगाव है। जब से वह बूढ़ा दयनीय दशा में पहुँचा है, वह पति के प्रति सदय हो उठी है।
3. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।2
उत्तर : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का शीर्षक सार्थक, सफल व्यंग्यात्मक है। इस नाटक की मूल समस्या है– व्यक्ति का व्यक्तित्वहीन होना। यदि शंकर समझदार और व्यक्तित्व संपन्न युवक होता तो गोपाल प्रसाद की इतनी हिम्मत न होती कि वह दो सुशिक्षित वयस्कों के बीच में बैठकर अपनी फूहड़ बातें करें और अशिक्षा को प्रोत्साहन दे। अगर शंकर अपने पिता के रोबदाब के आगे चूँ भी नहीं कर सकता, बल्कि उनकी हाँ में हाँ मिलाता है तो वह उसकी कायरता है। अतः कायरता दिखाने के लिए उसे रीढ़ की हड्डी के बिना सिखाया गया है। अतः 'रीढ़ की हड्डी' व्यंग्यात्मक, संकेतपूर्ण सार्थक और सफल शीर्षक है।

खण्ड – घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200–250 शब्दों में निबन्ध लिखिए– 10

(1) प्रदूषण की समस्या

संकेत–बिन्दु : प्रदूषण के कारण • प्रदूषण की व्यापकता • प्रदूषण वृद्धि के कारण • प्रदूषण के दुष्प्रभाव • प्रदूषण से बचने के उपाय • निष्कर्ष।

(2) आपदा प्रबंधन

संकेत–बिन्दु : प्राकृतिक आपदाएँ • दोषी कौन • सरकार की जिम्मेदारी • नागरिकों के कर्त्तव्य • निष्कर्ष।

(3) संगति का प्रभाव

संकेत–बिन्दु : भूमिका • संगति के प्रकार • संगति का प्रभाव • उदाहरण • उपाय • निष्कर्ष।

उत्तर :

(1) प्रदूषण की समस्या

संकेत–बिन्दु : प्रदूषण के कारण • प्रदूषण की व्यापकता • प्रदूषण वृद्धि के कारण • प्रदूषण के दुष्प्रभाव • प्रदूषण से बचने के उपाय • निष्कर्ष।

1. **प्रदूषण के कारण–** मनुष्य के जीवन में ज्यों–ज्यों विज्ञान का प्रभाव बढ़ता गया त्यों–त्यों वह विकास की ओर कदम बढ़ाता गया। झोपड़ियों और कच्चे घरों में रहने वाले मनुष्य ने आलीशान मकान बनाए। चौड़ी–चौड़ी सड़के बनाईं। तीव्रगामी मोटर गाड़ियाँ और घोर गर्जन करने वाले द्रुतगामी विमान बनाए। उसने अनेक कल–कारखाने स्थापित किए। इससे पेड़ों को अंधाधुंध काटा गया और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करते हुए प्रकृति के साथ छेड़छाड़ हुआ, जिसका परिणाम प्रदूषण के रूप में हमारे सामने हैं।
2. **प्रदूषण की व्यापकता–** किसी समय प्रदूषण स्थान विशेष या शहरों तक ही सीमित था परंतु गाँवों में विकास एवं मशीनीकरण होने से अब गाँव भी प्रदूषण से अछूते नहीं हैं। हाँ, अभी प्रदूषण का स्तर वहाँ शहरों जितना नहीं है। शहरों के प्रदूषित वातावरण में जीवन घुटन–भरा होता जा रहा है। इस समस्या ने विश्व को चिंता में डाल दिया है।
3. **प्रदूषण वृद्धि के कारण–** प्रदूषण बढ़ने के अनेक कारण हैं। इसके मूल में बढ़ती जनसंख्या है, जिसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक वातावरण समाप्त कर सीमेंट और कंकरीट के जंगल बनाए गए। विकास के लिए औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की गई। हरे–भरे पेड़ों को काटा गया। इन कारखानों से निकला धुआँ, बढ़ती दुर्गंध, गंदा पानी, डीजल– पेट्रोल की गंध, इनमें चलने वाली मोटरों और मशीनों का शोर जीवन के लिए घातक बन रहा है। इससे अनेक बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। इस उपभोगवादी युग में चारों ओर उत्पादन बढ़ाने पर ही जोर दिया जा रहा है, जिसके लिए मशीनीकरण किया गया। इनसे निकला कूड़ा–करकट, जानलेवा रसायन मिला गंदा जल बिना साफ किए तालाबों में फेंका जा रहा है, जो मनुष्यों के अलावा जलीय जीवों के लिए खतरा बनते जा रहे हैं।
4. **प्रदूषण के दुष्प्रभाव–** ध्वनि प्रदूषण के कारण श्रवण संबंधी बीमारियों के अलावा उच्च रक्तचाप और हृदयघात जैसी बीमारियाँ बढ़ रही हैं। बढ़ते वाहनों की आवाज और प्रत्येक घर में प्रयुक्त विद्युत उपकरणों से लगातार निकलने वाली आवाज हमारी सुनने की क्षमता को प्रभावित कर रही है।

   प्रदूषण की मार से प्राणी ही नहीं प्रकृति भी बुरी तरह से प्रभावित हो रही है। प्रकृति का संतुलन खोता जा रहा है। वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है। प्राकृतिक चक्र परिवर्तित हो रहा है जिससे असमय वर्षा, अचानक सर्दी, गर्मी का घटना–बढ़ना जैसी अकल्पित समस्याएँ सामने आ रही हैं और इसका सीधा असर फसल उत्पादन पर पड़ रहा है।
5. **प्रदूषण से बचने के उपाय–** प्रदूषण कम करने के लिए हमें अधिकाधिक पेड़–पौधे लगाने होंगे। कल–कारखानों को शहरों से दूर स्थापित करना होगा। जल और वायु प्रदूषण रोकने हेतु आवश्यक कदम उठाने होंगे। प्रदूषण कम किए बिना मनुष्य सुखमय जीवन नहीं जी सकेगा।
6. **निष्कर्ष–** निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रदूषण को कम करने का एकमात्र उपाय सामाजिक जागरूकता है। प्रचार माध्यमों के द्वारा इस संबंध में लोगों तक संदेश पहुँचाने की आवश्यकता है। सामूहिक प्रयास से ही प्रदूषण की विश्वव्यापी समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

(2) आपदा प्रबंधन

संकेत–बिन्दु : प्राकृतिक आपदाएँ • दोषी कौन • सरकार की जिम्मेदारी • नागरिकों के कर्त्तव्य • निष्कर्ष।

1. **प्राकृतिक आपदाएँ–**

   'कहर हुआ सुनामी का चक्रवात,
   भूस्खलन या फिर भूचाल का डर हुआ,
   कभी बाढ़ का, कभी सूखे का कौन है उत्तरदायी इनका
   प्रकृति या दोष है यह इंसान का।'
2. **दोषी कौन–** जब हम हजारों– लाखों लोगों को बेघर होते देखते हैं, घायल होते और मरते देखते हैं, तो यह प्रश्न हमारे सामने आ खड़ा होता है कि इनके लिए आखिर कौन जिम्मेदार है? प्राकृतिक कारणों के साथ–साथ मनुष्य भी पर्यावरणीय असंतुलन के लिए उत्तरदायी है। वास्तव में प्राकृतिक आपदा प्रकृति का मानव के प्रति रोष है जिसकी अभिव्यक्ति धरती से क्षणभर में जीवन का अस्तित्व मिटाने की क्षमता रखती है। प्रकृति का यह रोष, यह तांडव देख मानव सिहर उठता है, किन्तु जन–जीवन में सामान्य होते ही सब कुछ भूल जाता है। वह

अपनी भूल से तनिक भी सीख नहीं लेता तथा लगातार वृक्षों की कटाई कर अपने क्षणिक भोग की वस्तुओं का निर्माण करता जाता है और फिर सुनामी जैसी महाआपदा को निमंत्रण देता है। आज ऐसे उपायों की आवश्यकता बहुत अधिक है जिनकी योजना पहले से बनाई गई हो, सबको उनकी जानकारी हो तथा यथाअवसर उनका उपयोग किया जा सके।

3. **सरकार की जिम्मेदारी–** सरकार द्वारा मौसम की चेतावनी देकर, बचाव कार्य तथा प्राथमिक उपचार के बारे में विशेष प्रशिक्षण देकर लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है। अच्छे निर्माण कार्यों की समझ हमारे लिए बहुत आवश्यक है ताकि घरों, विद्यालयों तथा संस्थानों को सुरक्षित रखा जा सके। आपदारोधी इमारतों का निर्माण करना तथा विद्यमान इमारतों की मरम्मत तथा उनका नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक है।

केन्द्रीय स्तर पर जहाँ वस्तुओं और वित्तीय संसाधनों की पूर्ति की जाती है, वहाँ आपदाओं से निबटने का मुख्य दायित्व राज्य सरकार का है। जिला प्रशासन सभी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु होता है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटे–छोटे संगठन भी निरन्तर सहायता एवं बचाव कार्यों में लगे रहते हैं।

4. **नागरिकों के कर्त्तव्य–** हम सुसंस्कृत, सुसभ्य कहलाने वाले प्राणी आए दिन होने वाली आपदाओं के लिए सभी सरकार को कोसते हैं तो कभी ईश्वर से शिकायत करते हैं, लेकिन स्वयं हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। जरा सोचिए, किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा का शिकार सबसे अधिक कौन होता है? आम आदमी ही जब इसकी चपेट में आता है, तो क्यों न हम सब मिलकर कुछ ऐसे उपाय करें, जिससे इन आपदाओं का सामना किया जा सके। अपने मोहल्ले के लोगों के साथ मिलकर पहले से ही सुरक्षा योजनाएँ बना ली जानी चाहिए और समय–समय पर उनका अभ्यास करना चाहिए। लोगों को जागरूक करने के लिए अनेक अभियान चलाए जाने चाहिए।

समाज में इन आपदाओं से संबंधित सावधानी बरतने तथा उचित जानकारी पहुँचाने के लिए सबसे अच्छा उपाय है– विद्यालय में बच्चों को जागरूक करना।

हम प्राकृतिक आपदाओं को रोक तो नहीं सकते किंतु उचित जानकारी, समुचित व्यवस्था और संगठित उपायों से इनके हानिकारक प्रभाव को कम अवश्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त संकट के समय हमें साहस व धैर्य से इनका सामना करना चाहिए।

5. **निष्कर्ष–** प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए और इससे निपटने के लिए सरकार और लोगों को इसके प्रति सतर्क रहने की जरूरत है, इसके साथ ही हम सभी को अपने सुख, सुविधाओं के लिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन करने से बचना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने चाहिए और कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए तभी प्राकृतिक आपदा के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

(3) संगति का प्रभाव

संकेत–बिन्दु : भूमिका • संगति के प्रकार • संगति का प्रभाव • उदाहरण • उपाय • निष्कर्ष।

1. **भूमिका–**

'कदली, सीप, भुजंग ते, एक स्वाति, गुन तीन।
जैसी संगति कीजिए, तैसोई फल दीन।'

प्रसिद्ध कवि रहीम की ये पंक्तियाँ संगति की महत्ता बताने के लिए पर्याप्त हैं कि किस प्रकार स्वाति नक्षत्र की बूँद अलग–अलग संगति में पड़कर अलग–अलग रूप–रंग और गुण–धर्म वाली भिन्न प्रकृति वाली वस्तु बन जाती है। यही बूँद बेले के पत्ते पर पड़कर कपूर, सीप में गिरकर मोती और सर्प के सिर पर गिरकर मणि का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार मनुष्य की सफलता और असफलता उसकी संगति पर निर्भर करती है। चंदन के संपर्क में आने से विषधर अपना विष त्याग देता है और कपूर का संपर्क पाकर वस्तुएँ सुगंधित हो जाती हैं। स्वर्णपात्र में शराब रखी होने पर भी साधुजन उसकी निंदा ही करते हैं।

2. **संगति के प्रकार–** संगति को दो भागों में बाँटा जा सकता है–सत्संगति और कुसंगति। सत्संगति मनुष्य के लिए सर्वविधि से कल्याणकारी होती है। वह मनुष्य को अच्छी बातें सिखाती हुई उसके ज्ञान में वृद्धि करती है। इसके विपरीत कुसंगति उसे पतन के गर्त में ले जाती है। ऐसा व्यक्ति समाज विरोधी गतिविधियों में शामिल हो जाता है। वह अपने परिवार, समाज और देश की भलाई की बात सोच भी नहीं सकता है।

3. **संगति का प्रभाव–** मनुष्य को किस संगति में रहना है, इसका चुनाव उसे विवेकपूर्ण करना चाहिए। एक सामाजिक प्राणी होने के कारण एक–दूसरे से हम मिलते–जुलते रहते हैं। हमारी आवश्यकताएँ हमें परस्पर निकट लाती हैं। ऐसे में हम जिस प्रकार के व्यक्ति के साथ संगति करेंगे उसी प्रकार का असर हमारे मन और स्वभाव पर पड़ता है।

4. **उदाहरण–** लोहे का गुण है– पानी में डूब जाना। एक कील या छड़ पानी में तुरंत डूब जाती है, परंतु लकड़ी

में जुड़कर वही कील तैरती है। इसी प्रकार यदि हम हींग बेचने वाले के पास खड़े होते हैं तो कुछ दें ले या न दें ले, परन्तु उसकी महक हमें मिल ही जाती है और यदि शराबी और जुआरी के पास उठते–बैठते हैं या असामाजिक कार्य करने वालों की संगति में रहने का असर हमारे व्यक्तित्व पर जरूर पड़ता है। यह शाक्यमुनि गौतमबुद्ध की संगति का असर था कि अंगुलिमाल जैसा कुख्यात डाकू भी उनका भक्त बन गया और संतों की संगति के प्रभाव से ही डाकू वाल्मीकि रामायण के रचयिता वाल्मीकि बन गए।

5. **उपाय–** संगति का प्रभाव युवामन पर अधिक पड़ता है, इसलिए युवाओं और विद्यार्थियों को विशेषतः सजग रहने की आवश्यकता होती है क्योंकि इस उम्र में मन कोमल होता है, जिस पर संगति का असर अत्यंत शीघ्रता से होता है। अतः जीवन में उन्नति करने एवं अच्छा मनुष्य बनने के लिए सत्संगति ही करना चाहिए।
6. **निष्कर्ष–** किसी भी जीवन की विजय और पराजय उसकी संगति पर निर्भर करते हैं। जो व्यक्ति बुरा होकर भी विद्वान होता है उसका जीवन व्यर्थ होता है। अगर हमें जीवन में सफलता और उन्नति प्राप्त करनी है तो अपने जीवन की संगति पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

12. अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए कि वह अपने स्कूल में सदा उपस्थित रहे और परीक्षा की भली–भाँति तैयारी करे– 5

उत्तर :

सिंधु नगर,
परमहंस कॉलोनी
जयपुर।
दिनांक : 5 सितंबर, 2019
प्रिय मनीष
शुभाशीष

कल ही तुम्हारे कक्षाध्यापक का पत्र मिला। यह जानकर अत्यधिक दुख हुआ कि गत दो महीनों से तुम विद्यालय में प्रायः अनुपस्थित रहते हो।

इस वर्ष तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा है। यदि तुमने एक–एक क्षण का सदुपयोग कर, लगन से अध्ययन नहीं किया तो अनुत्तीर्ण हो जाओगे। एक वर्ष असफल होने का मतलब है, स्वयं को लाखों के पीछे धकेल देना। समय बहुत तेजी से बदल रहा है। तुम एक–दो वर्षों से देख रहे हो कि डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में भी केवल उन्हीं छात्रों को प्रवेश मिल पा रहा है, जिन्होंने 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हों। अगले दो वर्षों में स्थिति और भी विकट हो जाएगी। यदि तुम अपने सुखद भविष्य का निर्माण करना चाहते हो तो तुम्हें मन लगाकर परीक्षा की तैयारी करनी होगी। सफलता हमेशा परिश्रमी पुरुषों का ही वरण करती है।

मुझे विश्वास है कि मेरा अनुज मेरी बातों पर ध्यान देकर नियमित रूप से विद्यालय जाएगा और परीक्षा की भली–भाँति तैयारी करेगा।

तुम्हारा बड़ा भाई
गौरव

अथवा

आप एक महीने से अधिक समय तक विद्यालय नहीं गए। कक्षाध्यापक ने आपका नाम काट दिया है। पुनः प्रवेश पाने के लिए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना–पत्र लिखिए।

उत्तर :

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार, दिल्ली
विषय– पुनः प्रवेश के सम्बन्ध में।
महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय का नवमी कक्षा का छात्र था। दुर्भाग्य से दो नवम्बर को मेरे पिताजी का एक्सीडेंट हो गया। वे बाजार से सब्जियाँ लेकर लौट रहे थे, तभी एक कार ने उन्हें टक्कर मार दी। वे सड़क पर गिरकर बेहोश हो गए। इस दुर्घटना में उनके पैर की हड्डी टूट गई। मुझे उनकी देखभाल के लिए अस्पताल में रुकना पड़ता था। आज स्कूल आने पर कक्षाध्यापक से पता चला कि लगातार अनुपस्थित रहने के कारण मेरा नाम कक्षा से काटा जा चुका है। अब मैं अपना नाम पुनः लिखवाना चाहता हूँ।

आपसे विनम्र निवेदन है कि मेरी स्थिति पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए मुझे कक्षा में पुनः प्रवेश देने की कृपा करें।

आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।
धन्यवाद सहित
आपका आज्ञाकारी शिष्य
सिद्धार्थ
दिनांक– 10 दिसंबर, 2019

13. आप 9th की वार्षिक परीक्षा दे चुके हैं। अपने मित्र से प्रश्न–पत्रों के बारे में बात करते हुए संवाद लिखिए– 5

उत्तर :

नरेन्द्र– सचिन तुम्हारी वार्षिक परीक्षा समाप्त हो गई कि नहीं?

सचिन– मित्र! मेरे सामाजिक विज्ञान के दो पेपर अभी बाकी हैं।

नरेन्द्र– वह कब तक समाप्त हो जाएँगे।

सचिन– वह मंगलवार तक समाप्त हो जाएँगे।

नरेन्द्र– उसके बाद तुम्हारा क्या प्रोग्राम है? कहीं घूमने जाओगे?

सचिन– हाँ पिताजी से बात करके बताऊँगा।

नरेंद्र– मैंने तो पिताजी से बात कर ली है। वे कह रहे थे कि तुम सचिन के साथ नानी के घर शिमला चले जाना। वहाँ घूम भी लेना और नानी से मिल भी लेना।

सचिन– ठीक है। दोनों पेपर हो जाएँ फिर चलने के लिए बताऊँगा।

नरेंद्र– मैं भी चाचाजी से मिलने तुम्हारे घर आऊँगा। अच्छा, नमस्ते।

सचिन– मित्र नमस्ते।

अथवा

आपको अपनी कक्षा के साथियों के साथ पिकनिक पर जाना है, पिता जी के साथ हुए संवाद को लिखिए–

उत्तर :

मनोज– पिताजी! मेरी कक्षा के सभी छात्र अगले सोमवार को भरतपुर बर्ड–सेंचुरी जाएँगे।

पिताजी– क्या तुम्हारी भी इच्छा है वहाँ जाने की?

मनोज– हाँ पिताजी! दोस्तों के साथ पिकनिक जाने का मजा ही कुछ और होता है।

पिताजी– अगले सोमवार को कितने बजे स्कूल से तुम्हारी बस जाएगी?

मनोज– प्रातः छः बजे स्कूल से बस चल देंगी। अतः हमें 5:45 तक जरूर पहुँच जाना चाहिए।

पिताजी– पिकनिक पर खाने के लिए क्या ले जाओगे? बता दो, मैं बाजार से ले आऊँगा।

मनोज– नमकीन के पैकिट, बिस्कुट और कोल्डड्रिंक।

पिताजी– कोल्डड्रिंक तो गरम हो जाएगी, वह मत ले जाना।

मनोज– ठीक है, पिताजी! वहाँ हमारी अध्यापिकाएँ 2 बजे तक भोजन भी करायेंगी।

पिताजी– अच्छी बात है। चले जाना, लेकिन वहाँ गिरना नहीं, सँभल कर रहना।

मनोज– जी पिताजी मैं ध्यान रखूँगा।

WWW.CBSE.ONLINE

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and p aper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.